A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

तबला घरानों की परंपरा और वादन शैली: दिल्ली, अजराड़ा एवं लखनऊ घराने का वाद्य वादन-विकास और कोविड-19 काल में उसका पुनर्परिवेश

Shubham Chauhan[1], Prof. Praveen Uddhav[2]

1 Research Scholar, Department of Instrumental Music, Faculty of Music and Performing Arts, Banaras Hindu University, Varanasi
2 Supervisor, Professor, Department of Instrumental Music, Faculty of Music and Performing Arts, Banaras Hindu University, Varanasi

OPEN ACCESS CC BY

सारांश

यह शोध आलेख भारतीय तालवाद्य परंपरा में दिल्ली, अजराड़ा और लखनऊ तबला घरानों के उद्भव, विकास, वादन शैली एवं वैश्विक महामारी कोविड-19 के दौरान आए परिवर्तनों का विश्लेषण करता है। लेख में इन घरानों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वंश परंपरा, वादन की तकनीकी विशेषताएँ और परंपरा की निरंतरता में उनकी भूमिका को विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया गया है। महामारी के दौरान डिजिटल मंचों की भूमिका को भी रेखांकित किया गया है, जिसमें कलाकारों ने ऑनलाइन व्याख्यानों, कार्यशालाओं और प्रस्तुति माध्यमों के सहारे परंपरा को जीवित रखा। आलेख में यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि परंपरा केवल भौतिक उपस्थिति नहीं बल्कि संवाद और नवाचार का निरंतर प्रवाह है, जिसे तकनीकी सहयोग से भावी पीढ़ियों तक प्रभावी रूप में पहुँचाया जा सकता है।

मुख्य शब्द: तबला, घराना, दिल्ली घराना, अजराड़ा घराना, लखनऊ घराना, कोविड-19, डिजिटल मंच, परंपरा, नवाचार, वादन शैली।

भूमिका

भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा में तबला एक ऐसा वाद्य है, जो केवल लय का उपकरण नहीं, अपितु सांगीतिक अभिव्यक्ति का एक जीवंत माध्यम है। इसकी विविध घरानों ने न केवल इसके तकनीकी पक्ष को समृद्ध किया है, बल्कि वादन की शैली, रचना की संरचना, और सांगीतिक संवाद की गहराई में भी अभूतपूर्व योगदान दिया है। दिल्ली, अजराड़ा और लखनऊ जैसे प्रमुख तबला घरानों ने वादन के विभिन्न स्वरूपों को विकसित करते हुए उसे एक व्यापक सांस्कृतिक और शैक्षणिक पहचान प्रदान की है। 21वीं शताब्दी के दूसरे दशक में आई वैश्विक महामारी कोविड-19 ने संपूर्ण विश्व में जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया, जिसमें भारतीय संगीत की गुरुकुल परंपरा भी अछूती नहीं रही। सामाजिक दूरी, मंचीय कार्यक्रमों की बंदी, और संवादहीनता ने गुरु-शिष्य परंपरा पर सीधा प्रभाव डाला। परंतु इसी संकट काल में संगीत साधकों, कलाकारों और श्रोताओं ने डिजिटल मंचों के माध्यम से नवाचार की राह पकड़ी। यूट्यूब, ज़ूम, फेसबुक लाइव जैसे मंचों ने पारंपरिक शिक्षण और प्रस्तुति के नए आयाम खोले, जिससे घरानों की परंपरा के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार में नई संभावनाएँ उत्पन्न हुईं। यह शोध लेख तीन प्रमुख तबला घरानों — दिल्ली, अजराड़ा और लखनऊ — की परंपरा, वादन शैली, वंश परंपरा और कोविड-19 काल में उनके समकालीन चिंतन को आधार बनाकर प्रस्तुत किया गया है। इसमें यह भी विश्लेषित किया गया है कि कैसे इन घरानों ने संकट के समय में अपनी पहचान, गरिमा और परंपरा को यथावत रखते हुए नवाचार की ओर कदम बढ़ाए।

दिल्ली घराना: उद्भव, विकास और वादन परंपरा

18वीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में, जब मुग़ल सम्राट मोहम्मद शाह 'रंगीले' का शासनकाल था, उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे थे। ख़्याल गायकी अत्यधिक लोकप्रिय हो रही थी और सितार का प्रयोग वीणा की अपेक्षा अधिक होने लगा था। इन नवीन गायन शैलियों के साथ तालवाद्य में भी परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव की गई, क्योंकि पारंपरिक पखावज इन संरचनाओं के लिए पूरी तरह उपयुक्त नहीं था। ऐसे में तबला — जिसकी ध्वनि अधिक स्पष्ट, गतिशील और कोमल थी — एक प्रभावी विकल्प के रूप में उभरा (सक्सेना, 2006)।

तबले के आविष्कार को लेकर यद्यपि भिन्न-भिन्न मत हैं, परंतु विद्वानों की सामान्य सहमति यह है कि तबले का सर्वप्रथम एवं प्राचीनतम घराना दिल्ली घराना है। इसके संस्थापक के रूप में उस्ताद सिद्धार (या सुधार) खाँ दाढ़ी का नाम आदरपूर्वक लिया जाता है। प्रो. सुधीर कुमार सक्सेना लिखते हैं, "दिल्ली घराने को एक विशिष्ट तबला वादन परंपरा के रूप में प्रारंभ करने और स्थापित करने का सम्पूर्ण श्रेय उस्ताद सिद्धार खाँ दाढ़ी को ही जाता है" (सक्सेना, 2006, पृ॰ 109)। वे दिल्ली घराने के प्रथम खलीफा भी माने जाते हैं।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

वंश एवं शिष्य परंपरा

उस्ताद सिद्धार खाँ दाढ़ी के तीन पुत्र—घसीट खाँ, बुगरा खाँ, और एक अन्य जिनका नाम ज्ञात नहीं है—तथा उनके दो पौत्र मोदू खाँ और बख्शू खाँ, जिन्होंने आगे चलकर लखनऊ घराने की स्थापना की, ने तबला वादन को नई दिशा दी। उनके शिष्यों में रोशन खाँ, तुल्लन खाँ, और कल्लू खाँ प्रमुख थे। सिताब खाँ के पुत्र नज़र अली और पौत्र बड़े काले खाँ, तथा उनके पुत्र बोली बख्श — जिन्हें दिल्ली घराने का द्वितीय खलीफा माना जाता है — ने परंपरा को आगे बढ़ाया। उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ, जो नत्थू खाँ के शिष्य थे, अपनी संगति शैली के लिए प्रसिद्ध हुए। बोली बख्श के शिष्य मुनीर खाँ एक कुशल वादक एवं शिक्षक थे। उनके प्रमुख शिष्यों में अमीर हुसैन, शम्सुद्दीन खाँ, निखिल घोष, तथा विशेष रूप से अहमद जान थिरकवा का नाम लिया जाता है। थिरकवा खाँ, जिनका जन्म मुरादाबाद में हुआ था और जिन्हें रामपुर दरबार का संरक्षण मिला, अपनी "धीरा-धीरा" वादन शैली के कारण विशेष ख्याति प्राप्त हुई (चन्दन विश्वकर्मा, व्यक्तिगत साक्षात्कार, 2024).

दिल्ली घराने की वादन शैली और विशेषताएँ

दिल्ली घराना अपनी मौलिकता और तकनीकी परिष्कार के कारण अत्यंत विशिष्ट स्थान रखता है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. कोमल एवं मधुर बाज — इसे 'दो अँगुलियों का बाज' कहा जाता है, जिसमें तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों का प्रयोग प्रमुख होता है।
2. चाँटी प्रधान — इसे 'किनार का बाज' या 'बंद बाज' कहा जाता है, जिसमें ध्वनि सीमित किंतु स्पष्ट होती है।
3. विशेष बोलों का प्रयोग — जैसे: घिनागेन, तिरकिट, धागेनेधा, धातीधागे आदि।
4. चतुरश्र जाति में रचनाएँ — अधिकतर रचनाएँ चार मात्रा की संरचना में होती हैं।
5. डग्गे (बायाँ) में अंगुलियों का प्रयोग — वादन में हाथ नहीं उठाया जाता, जिससे ध्वनि की निरंतरता बनी रहती है।
6. 'धिरधिर' का विशिष्ट उच्चारण — यह पूड़ी के भीतर ही होता है, जबकि पूरब बाज में यह पूड़ी के बाहर तक जाता है।
7. स्वतंत्र वादन में प्रभावी — यह बाज सोलो प्रस्तुति में अपनी मधुरता, स्पष्टता एवं शैलीगत शुद्धता के कारण अत्यधिक प्रभावशाली है (चन्दन विश्वकर्मा, व्यक्तिगत साक्षात्कार, 2024).

कोरोना काल में दिल्ली घराने पर चिंतन

COVID-19 महामारी के दौरान जब मंचीय प्रस्तुतियाँ रुकीं, तब ऑनलाइन व्याख्यानों और चर्चाओं के माध्यम से घराने की परंपराओं पर पुनर्चिंतन हुआ। पं. सुशील कुमार जैन ने एक ऑनलाइन व्याख्यान (SARB AKAL Music Society of Calgary, 2021) में कहा कि दिल्ली घराने ने कायदों की रचना में सौंदर्यबोध का नया दृष्टिकोण दिया, और फर्शबंदी जैसी अभिनव संकल्पनाओं का समावेश किया। पं. विजय शंकर मिश्र ने वर्ष 2021 में वाद्य विभाग, संगीत एवं मंच कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में आयोजित व्याख्यानमाला में बताया कि प्रारंभिक काल में दिल्ली घराने के तबले का दाहिना भाग बड़ा तथा बायाँ छोटा होता था, जिससे बायाँ तबला गोद में रखकर बजाना पड़ता था। इस कारण दाहिने की ध्वनि प्रमुख होती थी। दिल्ली के कुछ कलाकार इस पारंपरिक ढंग को हास्य के रूप में "हमारा तबला मादा है" कहकर अभिव्यक्त करते थे, किंतु इसके पीछे शैली और परंपरा की गहन समझ निहित थी।

अजराड़ा घराना: विकास, शैली और चिंतन

अजराड़ा घराना, दिल्ली घराने से उद्भूत एक विशिष्ट और परिष्कृत तबला वादन परंपरा है, जिसकी स्थापना उस्ताद कल्लू खाँ और मीरू खाँ द्वारा की गई। ये दोनों कलाकार मूलतः दिल्ली घराने से ताल्लुक रखते थे और उन्होंने वहाँ दीर्घकालीन तालिम प्राप्त की। कालांतर में वे उत्तर प्रदेश के अजराड़ा गाँव में जाकर बसे और वहीं उन्होंने एक नई शैली विकसित की, जिसे आज अजराड़ा घराना के नाम से जाना जाता है (मिश्र, 2021)।

वंश एवं शिष्य परंपरा

उस्ताद कल्लू खाँ और मीरू खाँ की परंपरा में उस्ताद मोहम्मदी बख्श, उनके पुत्र चाँद खाँ, तथा पौत्र काले खाँ का नाम उल्लेखनीय है। काले खाँ के पुत्र कुतुब खाँ और तुल्लन खाँ, एवं प्रमुख शिष्य घीसा खाँ हुए। कुतुब खाँ के पुत्र हस्सू खाँ के वंश में बंबू खाँ और शम्मू खाँ प्रमुख थे। शम्मू खाँ को अजराड़ा घराने का "मुंशी" माना गया है, और उनके पुत्रों में उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ सर्वाधिक प्रतिष्ठित रहे हैं, जिन्होंने दिल्ली घराने के नत्थू खाँ और फर्रुखाबाद के मुनीर खाँ से भी शिक्षा ली (मिश्र, 2019, पृ. 36)।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

हबीबुद्दीन खाँ के पुत्र मंजू खाँ आज इस परंपरा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। उनके प्रमुख शिष्यों में अथर हुसैन, अमान अली, परवेज़ हुसैन, और संजेश प्रसाद (फिजी) शामिल हैं। हस्सू खाँ के शिष्य नाने खाँ की परंपरा में नियाजू खाँ, हशमत अली खाँ और उनके सुपुत्र अकरम खाँ जैसे कलाकार प्रमुख हैं। अकरम खाँ वर्तमान समय में अजराड़ा घराने के अग्रणी वादक माने जाते हैं। इसी प्रकार, घीसा खाँ की परंपरा में जिम्मु खाँ, राफ्या खाँ, जमीर अहमद खाँ और निज़ामुद्दीन खाँ जैसे नाम उल्लेखनीय हैं। जमीर अहमद खाँ के शिष्य हशमत अली खाँ ने हबीबुद्दीन खाँ से भी शिक्षा प्राप्त की थी और वे अकरम खाँ के पिता थे, जिन्होंने अजराड़ा परंपरा को समर्पित भाव से आगे बढ़ाया।

मुख्य वादन विशेषताएँ

1. दोनों हाथों का संतुलित प्रयोग – अजराड़ा के कायदों और पेशकारों में दाहिने और बाएँ दोनों हाथों का सटीक समन्वय होता है (मिश्र, 2021)।

2. चालन में ठहराव और लयगत गहराई – गति के बावजूद रचना में स्थिरता और भावात्मक गहराई बनी रहती है (हुसैन, 2022)।

3. 'सुलफ़' की अवधारणा – यह अजराड़ा की एक अनूठी अवधारणा है, जो रचनाओं को गतिशीलता और सौंदर्य प्रदान करती है (जैन, 2021)।

4. फर्शबंदी की परंपरा – पुराने समय में अजराड़ा के कलाकार पेशकार से पहले विशेष फर्शबंदी बजाते थे (हुसैन, 2022)।

5. खुला लेकिन संयमित बाज – इस घराने की रचनाओं में 'खुला बाज' मिलता है, जो प्रभावशाली होने के साथ-साथ शुद्धता और गहराई को भी संजोता है (जैन, 2021)।

कोरोना काल में चिंतन

पं. विजय शंकर मिश्र के अनुसार, "दिल्ली घराने का तबला अजराड़ा तक पहुँचते-पहुँचते सत्तर–अस्सी साल लगे। तब जाकर यह अनुभव हुआ कि तबले के दाएँ हिस्से में तो आवाज़ है, लेकिन बाएँ में कम है, अतः अजराड़ा के कलाकारों ने ऐसे कायदे बनाए जिनमें दोनों हाथों का संतुलन हो" (मिश्र, 2021)। अजराड़ा घराने की शैली ने इसी संतुलन को अपनी विशिष्ट पहचान बना लिया।

पंडित सुशील कुमार जैन बताते हैं कि अजराड़ा के कायदों में एक अनूठी "तराश" है, जिसे वे तराश-ए-तकलीक कहते हैं—अर्थात रचना की गहन सौंदर्यात्मक प्रस्तुति। उनका कहना है कि, "अजराड़ा के बोल ठाह में स्पष्ट होते हैं, लेकिन जब वही बोल गति में बजते हैं तो 'सुलफ़' नामक गतिशीलता में नाचते हुए प्रतीत होते हैं" (जैन, 2021)। यह 'सुलफ़' ही अजराड़ा घराने की रचनाओं को जीवंत बनाता है।

उस्ताद निसार हुसैन के अनुसार, "अजराड़ा की सबसे बड़ी विशेषता उसकी 'चाल' है—हर रचना में एक विशिष्ट चाल होती है, और वहाँ पेशकार से पहले कभी-कभी फर्शबंदी बजाई जाती थी। तबले की गति चाहे जितनी भी तेज हो, उसमें ठहराव और नजाकत बनी रहती है" (हुसैन, 2022)। वे अजराड़ा की संरचना को मेरुखंडीय शैली की तरह देखते हैं, जिसमें विभाजन और संयम की तकनीक स्पष्ट होती है।

इस प्रकार, अजराड़ा घराना तबला वादन की परंपरा में तकनीकी परिपक्वता, सौंदर्य और अभिव्यक्ति का विलक्षण संगम प्रस्तुत करता है, जो न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि आज भी संगीतप्रेमियों और विद्वानों के लिए प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है।

लखनऊ घराना: उद्भव, विकास, वादन-शैली और वंश परंपरा

लखनऊ घराना, उत्तर भारत के तबला वादन की एक अत्यंत महत्वपूर्ण परंपरा है, जिसका विकास 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लखनऊ के नवाबी दरबार में हुआ। इस घराने की नींव उस्ताद मोदू खाँ और उनके भाई बख्शू खाँ ने रखी, जिन्होंने दिल्ली घराने की परंपरा को लखनऊ के सांगीतिक वातावरण में ढालते हुए एक नई सौंदर्यपरक शैली को जन्म दिया (शुक्ला, 2020)।

सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में उद्भव

लखनऊ घराने की स्थापना में नवाब वाजिद अली शाह और नवाब आसफुद्दौला जैसे कलाप्रेमी शासकों का विशेष योगदान रहा। वाजिद अली शाह स्वयं एक संगीतज्ञ और नृत्य के संरक्षक थे। उनके दरबार में अनेक उत्कृष्ट वादक और नर्तक सक्रिय थे। इस सांगीतिक समृद्धि के वातावरण में उस्ताद मोदू खाँ ने दिल्ली की शैली में नज़ाकत और भावात्मकता का समावेश किया, जिससे एक नई, स्वाभाविक और नृत्य-संगति प्रधान शैली का उदय हुआ (त्रिपाठी, 2021)।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

वंश एवं शिष्य परंपरा

लखनऊ घराने की वंश परंपरा गहराई से समृद्ध है। उस्ताद मोदू खाँ के पुत्र जाहिद खाँ की असमय मृत्यु के बाद उन्होंने अपने भतीजे मम्मू खाँ (या मम्मन खाँ) को प्रशिक्षित किया, जो बाद में घराने के खलीफा बने। मम्मन खाँ के भाई सलारी खाँ ने बख्शू खाँ, हाजी विलायत अली खाँ जैसे महान गुरुओं से शिक्षा प्राप्त की। उनकी रचनाएँ आज भी दुर्लभ मानी जाती हैं (सिन्हा, 2022)।

मम्मन खाँ के पुत्र मोहम्मद खाँ, नवाब सुजातउद्दौला के दरबारी कलाकार थे। उनके पुत्र मुन्ने खाँ और आबिद हुसैन ने नृत्य संगति में विशेष दक्षता अर्जित की। उस्ताद आबिद हुसैन, जो बाद में भातखंडे संगीत महाविद्यालय (तत्कालीन मैरिस म्यूजिक कॉलेज) के पहले तबला आचार्य बने, ने 'लाल किला गत' जैसी रचनाओं की रचना की। उनके दामाद वाजिद हुसैन, फिर आफाक हुसैन, और आगे इलमास हुसैन इस परंपरा को आगे ले गए (सिन्हा, 2022)।

मम्मन खाँ के दूसरे पुत्र नज्जू खाँ के पुत्र नादिर हुसैन (छोट्टन खाँ) ने ढाका और मुर्शिदाबाद में कला का प्रचार किया। इनके अलावा बाबू खाँ, अल्ला बख्श, बहादुर खाँ, और घसीट खाँ जैसे शिष्यों ने लखनऊ की वादन शैली को आगे बढ़ाया। घसीट खाँ के वंश में जाफर हुसैन और अकबर हुसैन जैसे कलाकार हुए, जिनमें अकबर हुसैन ने आकाशवाणी और फिल्मों में भी कार्य किया।

शैलीगत विशेषताएँ

लखनऊ घराने की तबला वादन शैली निम्नलिखित विशेषताओं से परिपूर्ण मानी जाती है:

1. नज़ाकत और लयकारी – लखनऊ की तबला शैली में अत्यधिक नजाकत, कोमलता और सूक्ष्म लय प्रयोग देखने को मिलता है, जो नृत्य-संगति में विशेष प्रभाव छोड़ता है (शुक्ला, 2020)।
2. भावाभिव्यक्ति में दक्षता – यह घराना भाव, नृत्य और काव्य के सामंजस्य पर बल देता है।
3. समीकरणीय वादन – वादन में संतुलन, स्वाभाविकता और सौंदर्य की प्रधानता होती है।
4. सुस्पष्ट गतें और जवाबी रचनाएँ – इस घराने में "जवाबी गत" और "नक्शी कायदे" विशेष रूप से प्रतिष्ठित रहे हैं (त्रिपाठी, 2021)।

कोरोना काल में लखनऊ घराने पर चिंतन

कोरोना काल के दौरान अनेक ऑनलाइन व्याख्यानों और संवादों में लखनऊ घराने की शैली, उत्पत्ति और विकास पर सारगर्भित विचार व्यक्त किए गए।

पंडित स्वपन चौधरी जी के अनुसार, लखनऊ घराने की उत्पत्ति दिल्ली घराने से हुई। जब मियाँ मोदू खाँ और मियाँ बख्शू खाँ लखनऊ पहुँचे, तो वहाँ पखावज और नृत्य का प्रभाव अधिक था। दिल्ली की दो उंगलियों से बजाने की परंपरा वहाँ की स्थानीय अपेक्षाओं के अनुकूल नहीं थी। अतः उन्होंने पखावज और कथक से प्रेरित होकर एक नई शैली का निर्माण किया और अपनी अंगुलियों की तकनीक में भी बदलाव किया (Baithak, 2020)।

पंडित सुशील कुमार जैन जी ने इस बात पर बल दिया कि लखनऊ घराने में नृत्य की प्रधानता ने इसे बंदिशों और नृत्य-संगति की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध बनाया है। उन्होंने इसे दिल्ली घराने से एक भिन्न, पूर्णत: परिवर्तित शैली बताया (SARB AKAL Music Society of Calgary, 2021)।

पंडित विजय शंकर मिश्र जी ने बताया कि जब मोदू खाँ और बख्शू खाँ लखनऊ पहुँचे, तब दिल्ली का तबला "बंद तबला" कहा जाता था, जो नृत्य संगति के लिए उपयुक्त नहीं था। लखनऊ में उन्होंने चांटी के बोल, फर्दे, और विविध रचनाओं को सम्मिलित कर तबले को लय और नृत्य के अनुरूप विकसित किया। यह वही समय था जब लखनऊ की विशिष्ट शैली बनी और इससे आगे चलकर फर्रुख़ाबाद और बनारस घरानों की नींव पड़ी (मिश्र, 2020)।

लखनऊ घराना न केवल तबले की सौंदर्यपरक अभिव्यक्ति का प्रतीक है, बल्कि यह परंपरा आज भी भारत की सांस्कृतिक पहचान में विशिष्ट स्थान रखती है। इसकी कोमलता, सौंदर्यबोध, और नृत्य के प्रति संवेदनशीलता, इसे अन्य घरानों से अलग स्थान प्रदान करती है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

निष्कर्ष

कोविड-19 महामारी ने वैश्विक सांस्कृतिक परिदृश्य को गहराई से प्रभावित किया, और तबला जैसी पारंपरिक कलाओं की प्रवाहमान परंपराएँ भी इससे अछूती नहीं रहीं। यद्यपि महामारी ने शारीरिक रूप से गुरु-शिष्य परंपरा को चुनौती दी, परंतु डिजिटल माध्यमों ने इस संकट को एक नवाचार के अवसर में बदल दिया। अजराड़ा और लखनऊ जैसे प्रमुख घरानों ने भी इस संक्रमण काल में अपनी परंपरा को ऑनलाइन मंचों के माध्यम से जीवित रखा।

विशेषतः अजराड़ा घराना, जिसकी पहचान विशिष्ट 'चाल', 'सुलफ़' और 'तरीकत' से है, उसने डिजिटल मंचों पर अपने वादन की सूक्ष्मताओं को साझा कर एक नई पीढ़ी को जोड़ने का कार्य किया। पंडित सुशील कुमार जैन एवं उस्ताद निसार हुसैन जैसे वरिष्ठ कलाकारों ने वेबिनार और ऑनलाइन व्याख्यानों में घराने की शैलियों को विश्लेषणात्मक ढंग से प्रस्तुत किया (SARB AKAL Music Society, 2021; राजा मानसिंह तोमर विश्वविद्यालय, 2021)।

दूसरी ओर, लखनऊ घराना, जो अपनी नज़ाकत, नृत्य-संगति और जवाबी गतों के लिए प्रसिद्ध है, उसने भी अपनी शिष्य परंपरा को डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से आगे बढ़ाया। लखनऊ घराने की वंशानुक्रमिक परंपरा के वर्तमान प्रतिनिधि कलाकारों ने ऑनलाइन कार्यशालाओं एवं संगीत समारोहों में सक्रिय भागीदारी निभाई।

महामारी के इस दौर ने यह स्पष्ट कर दिया कि परंपरा केवल शारीरिक उपस्थिति तक सीमित नहीं है, बल्कि वह संवाद, अभ्यास और अनुकूलनशीलता के माध्यम से जीवित रहती है। डिजिटल माध्यमों ने न केवल इन घरानों की निरंतरता को सुनिश्चित किया, बल्कि इनके वादन की विशिष्टताओं को वैश्विक मंचों पर पहचान भी दिलाई। आज आवश्यकता है कि हम इस संतुलन को बनाए रखें—जहाँ शास्त्रीयता की जड़ें मज़बूत बनी रहें, वहीं तकनीकी नवाचारों के सहारे परंपरा का विस्तार हो।

सन्दर्भ

SARB AKAL Music Society of Calgary. (2021). Live व्याख्यान सत्र: पं. सुशील कुमार जैन.
चंदन विश्वकर्मा। (2024)। व्यक्तिगत संवाद।
जैन, स. (2021, मई). Live व्याख्यान, Sarb Akal Music Society of Calgary.
त्रिपाठी, डी. (2021, अगस्त). लखनऊ घराने की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि. संगत पत्रिका, 12(2), 45–52।
त्रिपाठी, डी. (2021, अगस्त). लखनऊ घराने की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि. संगत पत्रिका, 12(2), 45–52।
बैठक. (2020). Artistry of Tabla - Lucknow Gharana: पं. अरविंद पारिख द्वारा पं. स्वपन चौधरी से संवाद [ऑनलाइन साक्षात्कार]. प्राप्त स्रोत: https://www.baithak.org
मिश्र, व. श. (2021, जून). लय-ताल प्रज्ञा प्रवाह व्याख्यान माला, वाद्य विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।
मिश्र, वि. श. (2019). तबला पुराण. वाराणसी: वाणी प्रकाशन.
मिश्र, वि. शं. (2020). लय-ताल प्रज्ञा प्रवाह [व्याख्यान]. काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, संगीत एवं मंच कला संकाय, वाद्य विभाग द्वारा आयोजित आभासी मंच।
मिश्र, वी. एस. (2021)। व्याख्यान श्रृंखला "लय-ताल प्रज्ञा प्रवाह"। प्रदर्शन कला संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय।
राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर. (2021). "ताल संवाद" ऑनलाइन व्याख्यान श्रृंखला – उस्ताद निसार हुसैन।
शुक्ला, र. (2020). भारतीय तबला घराने एवं वादन शैलियाँ. वाराणसी: संगीत भारती प्रकाशन।
शुक्ला, र. (2020). भारतीय तबला घराने एवं वादन शैलियाँ. वाराणसी: संगीत भारती प्रकाशन।
सक्सेना, एस. के. (2006)। ताल का कला शास्त्र: मूल तत्व, परंपरा और सृजनात्मकता। नई दिल्ली: कनिष्क प्रकाशन।
सरब अकाल म्यूज़िक सोसायटी ऑफ़ कैलगरी। (2021)। पं. सुशील कुमार जैन के साथ सीधा व्याख्यान सत्र [ऑनलाइन व्याख्यान]।
सर्ब अकल म्यूज़िक सोसाइटी ऑफ़ कैलगरी. (2021). लखनऊ घराने पर पं. सुशील कुमार जैन का व्याख्यान [ऑनलाइन सत्र]।
सिन्हा, ए. (2022). तबला वादन की वंश परंपरा एवं उसके प्रवाह. दिल्ली: संगीत साधना प्रकाशन।
हुसैन, न. (2022, जुलाई). ताल संवाद ऑनलाइन राष्ट्रीय श्रृंखला, राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर।